HPS&AS (MAIN) EXAMINATION-2018

हिंदी

Time Allowed : 03 Hours | **Maximum Marks: 150**

समय : तीन घंटे | **अधिकतम अंक : 150**

प्रश्न–पत्र के लिए विशिष्ट अनुदेश

निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को, प्रश्नों के उत्तर देने से पहले, ध्यानपूर्वक पढ़ लें।

1. इसमें 09 प्रश्न हैं।
2. सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. परीक्षार्थियों को प्रश्न/प्रश्न के भाग के उत्तर खंड मे दिए गये निर्देशों के अनुसार ही देने होंगे।
4. प्रत्येक प्रश्न/प्रश्न के भाग के अधिकतम अंक उसके सामने दिए गए हैं।
5. एक प्रश्न के सभी भागों के उत्तर, प्रश्न–सह–उत्तर पुस्तिका में उनके नियत स्थान पर लिखे जाने चाहिए। प्रश्नों/प्रश्न के भाग के उत्तर अनुक्रमवार गिने जायेंगे।
6. अगर उत्तर काटा नहीं गया है, तो आंशिक उत्तर देने पर भी उसे गिना जायेगा। यदि प्रश्न–सह–उत्तर पुस्तिका में कोई पृष्ठ या भाग खाली छोड़ दिया गया है, उसे लकीर खींचकर स्पष्टतः काट देना आवश्यक है।
7. उम्मीदवारों को स्पष्ट, सुपाठ्य और संक्षिप्त उत्तर लिखना और शब्द सीमाओं का पालन करना आवश्यक है, जहाँ कहीं भी संकेत दिया गया हो। शब्द सीमा का पालन न करने पर दंडित किया जा सकता है।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions.

1. There are 9 questions.
2. All questions are compulsory.
3. Candidates should attempt questions / parts as per the instructions given in the section.
4. The number of marks carried by the question / part is indicated against it.
5. All parts of a question shall be attempted at the place designated for them in the Question-cum-Answer Booklet. Attempts of part / questions shall be counted in sequential order.
6. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
7. Candidates are required to write clear, legible and concise answers and to adhere to word limit, wherever indicated. Failure to adhere to word limit may be penalized.

1. निम्नलिखित अंग्रेजी अवतरण का हिंदी में अनुवाद कीजिएः 30 अंक

It is difficult to see criticism as anything but an innocent discipline. Its origins seem spontaneous, its existence natural: there is literature and so – because we wish to understand and appreciate it – there is also criticism. Criticism as a handmaiden to literature – as a shadowing of literature, a ghostly accomplice which, to adopt a phrase from 'Four Quarters' prevents it everywhere. Yet 'prevents' bears upon us here in its common as well as its classical meaning. If the task of criticism is to smooth the troubled passage between text and reader, to elaborate the text so that it may be more easily consumed, how is it to avoid interposing its own ungainly bulk between product and consumer, overshadowing its object in the act of obediently 'ghosting' it? It seems that criticism is caught here in an insoluble contradiction. For if its task is to yield us the spontaneous reality of the text, it must permit no particle of its own mass to mingle with what it mediates; such mingling would signal the unspeakable crime of 'appropriation'. Yet how is it to do this without consigning itself to that mode of natural existence which is the life of parasite? How is it to avoid that form of self- transparency, that humble conformity to the life of the text, which is mere self-abolition? All criticism should confess its limitations.

अथवा

There were several reasons why Gandhi finally decided to make abolition of the salt tax into the issue to launch his next (and ultimately most famous) Satyagraha campaign. First, the sale of salt had been a government monopoly going back to Mughal times. Robert Clive used the accompanying tax to reward his cronies in Bengal, and in 1878 it became uniform across India and the princely states. The salt tax had been a symbol of sovereignty since the days of Akbar, and since 1878 a symbol of India's subjection to the British.

That meant that everyone in India, rich or poor, paid the tax. It made a clear and unambiguous uncontroversial target for popular action. Gandhi hoped the protest against the salt tax could unite Hindus and Muslims against the Raj. It might also draw in the peasantry, whom the tax heart most. India's poorest had rallied to him in his most successful Satyagraha campaigns, in Champaran and in Kaira and most recently in Bardoli. Before that they had saved him from humiliation in South Africa. More and more Gandhi saw them as his true constituency. Here was a chance to free them from a

tax that pinched their meager incomes, especially as the worldwide depression loomed on the doorstep of India.

2. निम्नलिखित गद्यांश की व्याख्या कीजिएः 15 अंक

मनुष्य को अन्य पशुओं की भाँति, सबसे पहले अपने लिए आवश्यक भोजन की चिंता करनी पड़ती है। किंतु उसकी इस चिंता में एक विशेषता है। एक असाधारण बुद्धि उसे अन्य पशुओं से पृथक् करती है। इसी बुद्धि के परिणामस्वरूप वह वर्तमान ही की चिंता से मुक्त होकर संतुष्ट नहीं हो सकता, भविष्य के लिए भी प्रयत्न करता रहता है। उसके स्वभाव की यह विशेषता उसे चिरकाल तक अव्यवस्थित जीवन नहीं व्यतीत करने देती। क्रमशः स्त्री-पुत्र आदि से संयुक्त होकर एक समुचित स्थान में गृहस्थ जीवन व्यतीत करने में वह अपने जीवन की सफलता का अनुभव करता है। उसी के ऐसे अनेक परिवारों के एकत्र हो जाने से अथवा एक ही परिवार के कालान्तर में विकसित हो जाने से एक ग्राम उत्पन्न हो जाता है। शत्रु से अपनी रक्षा करने के लिए इस प्रकार के समस्त ग्राम अपना संगठन व्यक्तियों और परिवारों के पारस्परिक सहयोग पर अवलम्बित रखते हैं। इस सहयोग का क्षेत्र जितना ही व्यापक होता जाता है, मानव प्रकृति की विभिन्नताओं के कारण पारस्परिक सामंजस्य के मार्ग में उतनी ही पेचीदगी बढ़ती जाती है। फलतः इस सामंजस्य की सिद्धि के लिए मानव-मस्तिष्क तरह-तरह के व्याख्यानों में प्रवृत्त होता है।

(अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध')

अथवा

एकता बड़ा मधुर शब्द है। इसके प्रत्येक अक्षर में वह जादू है, जो कवि की कल्पना अथवा अन्वेषक की बुद्धि से परे है। एकता अथवा एकरूपता में कोई अंतर नहीं है। यह समूची सृष्टि उस परमात्मा की इच्छा के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुई है। उसने कल्पना की कि वह अनेक हो जावे और उसी कल्पना के विकार से यह माया-जाल बना, पर सृष्टि की प्रत्येक रचना में, परमात्मा के साथ साम्य तथा सद् रूपता का अन्तर्निहित आभास रहता है। प्राणी विवेक की शरण लेकर अविवेक से निरंतर युद्ध करता रहता है। सबके साथ अपनी सत्ता को मिलाने की चेष्टा उसी एक विश्वात्मा में सम्मिलित कर लिए जाने का प्रयास है, जिससे विलग हो जाने से यह भेद-भाव प्राप्त हुआ था।

पृथ्वी की धूल से उत्पन्न गर्द हवा से ऊपर उड़ जाती है, पर वह चेष्टा नीचे ही गिरने की करती है। बीज से उत्पन्न फल पुनः पृथ्वी पर गिरकर बीज रूप हो जाना चाहता है। समुद्र से प्राप्त वर्षा जल से प्रवाहित सरिता पुनः समुद्र के साथ साकार होना चाहती है। तब मनुष्य की एकता के प्रति अनुरक्ति के लिए क्या कहा जावे। आज जो लड़ रहा है, झगड़ रहा है, जो आपस में एक टुकड़े

के लिए कपटजाल कर दूसरे के सत्यानाश पर तुला हुआ है, वह भी अपनी इस तृप्ति से सुखी नहीं है। लड़ना किससे और क्यों, झगड़ा किससे और क्यों? जब सब एक हैं, जब सब एक-दूसरे के सुख-दुख के जिम्मेदार हैं, जब एक के पैर में काँटा चुभने से दूसरे के जी में कसक पैदा हो जाती है, जब एक की वेदना दूसरे के सुख के स्वर को भंग कर सकती है, तब विरोध किसका? हमको किसी ने बहका रखा है कि दूसरे का अपहरण तुम्हारा सुख है, दूसरे का अभाव तुम्हारी विजय !

(मुंशी प्रेमचंद)

3. निम्नलिखित कविता की व्याख्या कीजिए: 15 अंक

माँ उसको कहती है रानी
आदर से, जैसा है नाम;
लेकिन उसका उल्टा रूप,
चेचक के दाग़, काली, नक-चिपटी,
गंजा सर, एक आँख कानी।
रानी, अब हो गई सयानी,
बीनती है, काढ़ती है, कूटती है, पीसती है,
डलियों के सीले अपने रूखे हाथों मीसती है,
घर बुहारती है, करकट फेंकती है,
और घड़ों भरती है पानी;
फिर भी माँ का दिल बैठा रहा,
सोचती रहती है दिन-रात,
कानी की शादी की बात,
मन मसोसकर वह रहती है,
जब पड़ोस की कोई कहती है-
"औरत की जात रानी,
ब्याह भला कैसे हो
कानी जो है वह !"
सुनकर कानी का दिल हिल गया,
काँपे कुल अंग,
दायीं आँख से
आँसू भी बह चले माँ के दुख से,

लेकिन वह बायीं आँख कानी
ज्यों की त्यों रह गई रखती निगरानी।

(सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला')

अथवा

ये हरे वृक्ष
सहचर मित्रों-से हैं सहस्त्र डालें पसार
(ये आलिंगन-उत्सुक बाँहें फैलीं हजार)
अपने मर्मर अंगार-राग
ये मधु-आवाहन के स्फुलिंग
बिखरा देते हैं बार-बार।
डस जाती है हृतल, इनकी यह हरी आग।
इनके प्राकृत औदार्य-स्निग्ध
पत्तों-पत्तों से,
स्नेह-मुग्ध
चेतना प्राणों की उठी जाग।
इस हरी दीप्ति में भभक उठा मेरे उर का व्यापक अभाव
मन के अंदर गहरी दरार
उसमें उग आते कुसुम, पत्र
नव-नवल लता, तरु का प्रसार
मन के अंदर गहरी दरार में जल उठता ज्यों नया भार।
हैं गहन क्षितिज के नील शांत
कोने में गहरे हरे मेघ
सौहार्द्र भाव के गहन-हरित पुंजों में
गहरी तृषा एक।
चुपचाप बेध देती दुराव
डालती जला सारा छिपाव
भरती प्राणों में अन्य प्राण।

(गजानन माधव 'मुक्तिबोध')

4. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 800 शब्दों में एक निबंध लिखिएः 40 अंक

(क) साहित्य और समाज;

(ख) सामाजिक विकास का लक्ष्य और स्त्री;

(ग) शिक्षा का उद्देश्य;

(घ) वर्तमान समय में जनमाध्यमों की भूमिका;

(ड.) लोकतंत्र का संकट।

5. निम्नलिखित वाक्यों के शुद्ध हिंदी रूप रूप लिखिएः 10 अंक

(क) मैं निश्चय किया हूँ कि मैं पढ़ूंगा।

(ख) उन्होंने शाम को जाना है।

(ग) वह आने को होंगे।

(घ) लड़का लड़की जाता है।

(ड.) हमको खाने को मांगता।

(च) पहाड़ की मौसम सुहानी है।

(छ) बच्चा लोग मैदान में खेलता है।

(ज) स्कूल में मास्टर का कमी है।

(झ) हमको यह आज़ादी मुश्किल से मिला है।

(ञ) इस किताब की मूल्य कितनी होगी?

6. निम्नलिखित मुहावरों और लोकोक्तियों का अर्थ बताते हुए इस प्रकार वाक्य में प्रयोग कीजिए कि इनका अर्थ स्पष्ट हो जाएः 1+1= 20 अंक

(क) करेला और नीम चढ़ा

(ख) काला अक्षर भैंस बराबर

(ग) ऊँट के मुँह में जीरा

(घ) नाच न जाने आंगन टेढ़ा

(ड.) घर का भेदी लंका ढाहे

(च) गूलर का फूल होना

(छ) नौ दो ग्यारह होना

(ज) अंधे की लाठी होना

(झ) रामजी की गाय होना

(ञ) हवा से बातें करना

7. निम्नलिखित वाक्यों में उपयुक्त विराम चिह्नों का प्रयोग कीजिएः 8 अंक

(क) वह ऐसा नही कर सकता उसे यह करने के पहले सोचना चाहिए

(ख) अपने विकास के साथ साथ समाज और राष्ट्र के विकास के लिए सोचना करना ऐसा चाहना समझदार नागरिक का कर्तव्य है।

(ग) बन्द किवाड़ों से निकलकर एक नन्हा-सा पहला पहला स्वर आँगन में फैल गया शाहजी विभोर हो उठे यह मीठी आवाज़ अब उनके घर में किलकारियाँ बह बह जाएँगी

(घ) डा. कालिदास नाग ने समाचारपत्रों के इतिहास का जो संक्षिप्त वर्णन प्रकाशित किया था उसमें लिखा था कि सर सैय्यद अहमद खाँ के भाई मुहम्मद खाँ ने उर्दू में 'सैयदुल अख़बार' नाम से पहला अख़बार प्रकाशित किया था पर यह बहुत काल तक जीवित नहीं रहा।

8. निम्नलिखित में से शुद्ध वर्तनी वाले शब्द छांटकर लिखिएः 6 अंक

उज्ज्वल, उन्नयक, उपस्थिति, उतकोच, व्यवहारिक, व्यावहारिक, व्युत्पन्न, आशीर्वाद, अभीभावक, अनुशाशन, वैचारीकता, सम्मिलन।

9. निम्नलिखित शब्द-युग्मों का प्रयोग इस प्रकार वाक्य में कीजिए कि इनके अलग अलग अर्थ स्पष्ट हो जाएं : 6 अंक

(क) कोश-कोष

(ख) अंश-अंस

(ग) अकथ-अनथक

(घ) अली-अलि

(ड.) अवलम्ब-अविलम्ब

(च) अभिज्ञ-अनभिज्ञ

*****